जिले में स्वास्थ्य व्यवस्था चरमराई

आधे से अधिक डॉक्टरों एवं पैरामेडिकल स्टाफ के पद खाली

नवभारत न्यूज

पन्ना, 17 मई। इन दिनों जिले की स्वास्थ्य व्यवस्था पूरी तरह से डगमगा गई है। एक तो वैसे भी जिला चिकित्सालय सहित शासकीय अस्पतालों में डाक्टर सहित पैरामेडिकल के आधे से अधिक पद खाली पड़े हुए हैं वहीं जिला अस्पताल सहित जिले के सरकारी अस्पतालों मे पदस्थ अधिकांश डॉक्टर अपनी तिजोरी भरने में लगे हुए हैं।

मरीजों का सरकारी अस्पतालों में या तो उपचार ही नहीं हो रहा है या तो उपचार हो रहा है तो मेडिकल स्टोर संचालक एवं सरकारी डॉक्टरों की मिली भगत से मरीजों को जमकर लूटा जा रहा है। यहां आलम यह है कि अस्पतालों में मरीजों को देखकर उपचार किया जाता है। मरीजों का वेश भूषा यानि पोशाक देखने के बाद यदि समझ में आया गया कि मरीज की जेब गरम होगी तो उसका विधिवत उपचार तो किया जायेगा, लेकिन दवा बाहर की लिखी जायेगी और दवा ऐसी दुकान में मिलेगी जिस दुकान में संबंधित डॉक्टर की सांठगांठ रहती है। वहीं गरीब मरीजों का उपचार करने के नाम पर सिर्फऔपचारिक खानापूर्ति की जाती है। इन्हें बाहर की दवा लिखने से भी कोई फायदा होने वाला नहीं है यह जानकर ढंग से उपचार ही नहीं किया जाता। कुल मिलाकर पन्ना जिले की स्वास्थ्य एवं चिकित्सा व्यवस्था इन दिनों बेपटरी हो चुकी है। जिलेवासी काफी परेशान देखे जा रहे हैं।

जब अस्पताल मे दवा मिलती तो क्यों फलते फूलते मेडिकल स्टोर:- स्वास्थ्य में विभाग के ऊपर एक बहुत बडा सवाल खड़ा हो रहा है क्योंकि एक ओर विभाग दावा कर रहा है कि हर मर्ज की गुणवत्ता युक्त दवा सभी सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध है।

ऐसी स्थिति में जब मरीजों को सरकारी अस्पतालों में दवा मिलती है तो मेडिकल स्टोर क्यों फलते फूलते है। हकीकत यह है कि सरकारी अस्पतालों में आने वाली दवाओं की कालाबाजारी आम बात हो गई है यूं कहे कि दवा की कालाबाजारी इन दिनों अपने पूरे शबाब पर है। ये आरोप इसलिए लगाये जा रहे हैं क्योंकि जाहिर सी बात है जब अस्पलताल में मरीजों को सरकारी दवा मिलती तो फिर मरीज बाहर की दवा क्यों खरीदते। ऐसी स्थिति मे मेडिकल की दुकानें बंद हो जाती। क्योंकि जब मरीजों को अस्पताल मे नि:शुल्क दवा उपलब्ध कराई जाती तो फिर मरीज बाहर की दवा क्यों खरीदते और जब मरीज मेडिकल दुकानों से दवा न खरीदते तो मेडिकल की दुकानें अपने आप बंद हो जाती ऐसी स्थिति मे अपने आप साबित होता है कि सरकारी अस्पतालों में नि:शुल्क दवा उपलब्ध कराने के नाम पर सिर्फ ढोंग किया जा रहा है। हकीकत यह है कि विभाग के जिम्मेदार जानबूझकर मरीजों को अस्पताल की सरकारी दवा नहीं देते क्योंकि यदि सरकारी दवा देंगे तो मेडिकल दुकानों के माध्यम से होने वाला मुनाफा बंद हो जायेगा।

प्राइवेट प्रैक्टिस में मस्त हैं डॉक्टर

सरकारी अस्पतालों में पदस्थ अधिकांश चिकित्सक प्राइवेट प्रैक्टिस में मस्त हैं। इन्हें ड्यूटी के समय में भी अपने निजी क्लीनिक में प्राइवेट प्रैक्टिस करते आसानी से देखा जा सकता है। जिला चिकित्सालय सहित सामुदायिक स्वास्थ्य केद्रों में पदस्थ डॉक्टर के ऊपर आरोप लगाये जा रहे हैं कि सरकारी अस्पताल में जो मरीज दवा कराने जाता है उसे भी डॉक्टर अपने निजी क्लीनिक में भेज देते हैं और सरकारी बंगले में जहां अपनी निजी क्लीनिक बनाये हुए हैं वहां मरीजों को भर्ती भी करते हैं और मरीजों से मन मुताबिक दवा के नाम पर मोटी रकम लेते हैं कोई मरीज यदि चाहता है कि सरकारी अस्पताल में उपचार हो जाये और अस्पताल से ही दवा उपलब्ध हो जाये तो ये नामुमकिन है। यदि सरकारी अस्पताल में डॉक्टर से मुलाकात भी हो गई तो सिर्फफायदा इतना होगा कि डॉक्टर की फीस नहीं देनी पडेगी लेकिन दवा तो बाहर की ही लिखी जायेगी और जरूरी भी नहीं की सरकारी अस्पताल मे दवा कराने के बाद मरीज के स्वास्थ्य में सुधार आयेगा। ये तो महज उदाहरण है, इसी तरह की समस्या जिले के अधिकांश सरकारी अस्पतालों में देखी जा सकती है।

करोड़ों खर्च के बाद भी नतीजा सिफर

केंद्र एवं राज्य सरकार लोगों को बेहतर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया कराने के लिये करोड़ो रूपये खर्च कर रही है। बडे बडे अस्पताल भवन बने हुए हैं। अच्छे खासे पैकेज पर डॉक्टरों को पदस्थ किया गया है लेकिन जिले को इसका लाभ नही मिल पा रहा है। सरकार की मंशा पर फिलहाल पानी फिरता नजर आ रहा है क्योंकि न स्टाफहै और ना ही सुविधाएं तो कैसे लाभ मिले। अब सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों का ही हाल देखें तो अस्पताल भवन नजर दौड़ाने के बाद लगता है कि निश्चित रूप से यहां बेहतर चिकित्सा मुहैया होगी लेकिन अंदर प्रवेश करने के बाद पता चला कि डॉक्टर ही नहीं है और जो डॉक्टर पदस्थ भी है वे सब अपने निहित स्वार्थ को सिद्ध करने में लगे रहते हैं न तो मरीजों का अच्छे से उपचार होता और नहीं अस्पताल से दवा मिलती। ऐसे में निश्चित रूप से सरकार का सपना चकनाचूर हो रहा है।

पतने नदी पुल पर दो बाइकों की आमने सामने टक्कर

तीन घायल, एक की हालत नाजुक

नवभारत न्यूज

पन्ना, 17 मई। पतने नदी पुल पर शनिवार रात करीब 9 बजे दो बाइकों के बीच आमने-सामने की जोरदार भिड़ंत हो गई। हादसा इतना भीषण था कि टक्कर लगते ही तीनों युवक उछलकर सड़क पर जा गिरे, जिससे मौके पर चीख-पुकार मच गई। इस दुर्घटना में एक युवक की हालत बेहद नाजुक बनी हुई है, वहीं दो अन्य युवक घायल हुए हैं।

जिन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के मुताबिक, पवई के रहने वाले 18 वर्षीय यश खंगार पिता योगेंद्र खंगार और 19 वर्षीय दिलीप खंगार पिता देवेंद्र खंगार कलेही माता मंदिर से दर्शन कर घर लौट रहे थे। इसी दौरान पतने नदी पुल के पास सामने से आ रही एक अन्य बाइक से उनकी सीधी टक्कर हो गई। दूसरी बाइक को ग्राम रेहुटा निवासी 35 वर्षीय योगेंद्र पिता भोले सिंह राजपूत चला रहे थे। चश्मदीदों ने बताया कि दोनों बाइकों की रफ्तार इतनी तेज थी कि भिड़ंत होते ही जोरदार आवाज आई, जिसे सुनकर आसपास के लोग तुरंत मौके की तरफदौड़े। स्थानीय लोगों ने बिना वक्त गंवाए सभी घायलों को संभाला और तुरंत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पवई पहुंचाया। अस्पताल में मौजूद डॉ. विवेक तिवारी और मेडिकल स्टाफने फौरन घायलों का प्राथमिक इलाज शुरू किया। डॉक्टरों के अनुसार, योगेंद्र राजपूत के सिर और शरीर पर गंभीर चोटें आई हैं, जिसके चलते उनकी नाजुक हालत को देखते हुए उन्हें बेहतर इलाज के लिए कटनी रेफर कर दिया गया है। वहीं, यश और दिलीप का इलाज पवई अस्पताल में ही चल रहा है।

हादसे के बाद पुल पर कुछ देर के लिए जाम की स्थिति बन गई थी। स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि पतने नदी पुल पर रात के वक्त रफ्तार का कहर देखने को मिलता है और लापरवाही से वाहन चलाने के कारण पहले भी कई हादसे हो चुके हैं। लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि पुल पर हादसों को रोकने के लिए गति अवरोधक बनाए जाएं और तेज रफ्तार वाहनों पर कार्रवाई की जाए।

चोरों के लिए वरदान बनीं कबाड़ की दुकानें

नवभारत न्यूज

पन्ना, 17 मई। कबाड़ का अवैध व्यवसाय शहर से लेकर गांव तक बेखौफहोकर फल फूल रहा है। मजे की बात तो यह है कि कारोबार में संलिप्त कमाई अवैध कारोबारियों के खिलाफ जिम्मेदार तंत्र कोई दखल नहीं देता। बगैर अनुमति के चल रही इन दुकानों पर सरकारी तंत्र का कोई नियंत्रण नहीं है।

आलम यह है कि क्षेत्र में संचालित कबाड़ की दुकानें जो इन कारोबारियों के लिए लाखों रुपए की अवैध कमाई का जरिया बनी हुई हैं। जहां सभी नियम कायदों को दरकिनार कर इन दुकानों में कबाड़ खरीद-बिक्री की कोई रसीद नहीं होती है और न ही इन अवैध कारोबारियों के पास कोई रिकॉर्ड होता है। स्थिति यह है कि चोर कहीं से भी सामान चोरी कर लाते हैं और कबाड़ियों की दुकान में आसानी से खपा देते हैं। इससे चोरों का हौसले बढ़ते जाते है। हैरानी की बात है कि इस व्यवसाय में पुलिस और प्रशासन का कोई नियंत्रण नहीं होता। प्रशासनिक ढिलाई के चलते इस व्यवसाय में लोहे के सामान, घरेलू उपयोग के सामान दलालों के माध्यम से खरीदकर लाखों कमा रहे हैं। चोरी का ज्यादातर सामान कबाड़ियों के यहां दुकानों में बेचा जाता है। देखा कुछ इस तरह जा रहा है कि चाहे वह चार पहिया वाहन हो या दो पहिया या अन्य मशीनरी सामग्री लोग किसी भी सामान के लिए पहले कबाड़ दुकानों में संपर्क करते हैं। क्योंकि यहां पर सेकंड हैंड सामान कम कीमत पर मिल जाता है।

इसी तरह इन कबाड़ियों की दुकानों में इलेक्ट्रॉनिक सामान, तांबा व एल्युमिनियम के सामान आसानी से मिल जाते हैं। ये सारे सामान कहां से इन दुकानों में आते हैं।

बेखौफ होकर कबाड़ी चला रहे हैं दुकानें

यह जिम्मेदार जानने की कोशिश नहीं करते हैं और न ही पुलिस इसकी जांच करती है। इसके कारण ये बेखौफहोकर कबाड़ी दुकान चला रहे हैं कबाड़ वाले दिनभर नगर व गांव में घूमकर कबाड़ खरीदते हैं। इनमें कई ईमानदार होते हैं। कुछ ऐसे भी होते हैं, जो कबाड़ खरीदने के बहाने दिन में इलाके का जायजा लेते हैं और रात के अंधेरे में चोरी की वारदात को अंजाम देते हैं। चोरी के सामान कबाड़ दुकानों में बेचा जाता है। और इसी तरह के खरीद-फरोख्त के खेल में इन तथाकथित कबाड़ियों की दुकान का संचालन होता है जिसके दम पर नाम तो कबाड़ी का होता है लेकिन यह कबाड़ी चंद दिनों के अंदर करोड़ों रुपए के आसामी बन चुके हैं।

पारा 44 डिग्री छूने को बेताब,दोपहर सड़कें हो जाती हैं वीरान

नवभारत न्यूज

पन्ना, 17 मई। आग बरसती सूरज की किरणों के बीच चरम पर पहुंच चुकी गर्मी व उमस ने हर वर्ग के लोगों को बेहाल कर दिया है। शहर सहित सभी तहसील इलाकों मे एक सप्ताह से पड़ रही भीषण गर्मी से पूरा जनजीवन अस्त व्यस्त हो गया है। मई माह में गर्मी अपने चरम पर है इस भीषण गर्मी से बच्चे बूढे तो परेशान हैं ही साथ ही युवा वर्ग भी लू भरी गर्मी को सहन नहीं कर पा रहे हैं।

सुबह से निकल रही धूप आग के गोले के रूप तब्दील होकर बदन को झुलसा रही है। स्थिति यह है कि दोपहर को तो सड़को मे सन्नाटा पसर जाता है, वहीं मुख्य बाजारों मे भी इक्का दुक्का लोग ही पहुंचते हैं।

भटकते हैं पानी के लिये:- राहगीर व मुसाफिरो को गला तर करने के लिये इधर उधर भटकना पड़ता है। पारे में आये दिन हो रहे उतार चढ़ाव की वजह से गर्म हवा के थपेड़े भी लोगों को झुलसाने मे कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। धूप व गर्मी के चलते एक ओर विशेषकर मजदूरी पेशा से जुडे लोग काम करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं। लगभग एक हफ्ते से पारा 43-44 के बीच चल रहा है। मौसम विभाग का कहना है कि अभी इस भीषण गर्मी से जल्द निजात नहीं मिलेगी। वहीं इस भीषण तपिश मे बिजली कटौती भी लोगों को जमकर परेशान कर रही है। स्थिति यह रहती है कि शेड्यूल के अलावा भी बिजली गुल रहती है। दिन में गर्म हवाओं के झोंकों से लोगों के हाल बेहाल है। बढ़ती गर्मी का आलम ऐसा है कि रात मे भी गर्मी से राहत नहीं मिल पा रही हैं। मौसम में ये परिवर्तन पिछले एक सप्ताह से देखने को मिल रहा है। घर के बाहर लू की लपटें बदन में आग लगा देती है तो घर के भीतर कूलर पंखा भी गर्म हवा का झोका दे रहे हैं। जिससे बदन पूरी तरह से झुलस जाता है और ऊपर से जब बिजली रहती भी है तो लो बोल्टेज की समस्या से शहरवासी परेशान रहते है। उनके कूलर पंखे ऐसे चलते है जैसे की उनमें जान ही न हो।

बढ़ी मरीजों की संख्या

गर्मी के मौसम मे लोगों को कई तरह की बीमारियों से ग्रसित होने का खतरा बना रहता है। इस मौसम में खासतौर पर खानपान पर ध्यान न देने की वजह से लोग आमतौर पर हैजा, डायरिया व ऐसी अन्य बीमारियों से पीडित हो रहे हैं। पिछले कुछ दिनों से हो रही तेज धूप व उमस की वजह से लोगों के बीमार होने का दौर शुरू हो गया है। जिला अस्पताल से मिली जानकारी के अनुसार गर्मी के मौसम मे होने वाली बीमारियों से ग्रसित मरीज अपना इलाज कराने के लिये पहुंच रहे हैं। वहीं शहर के अन्य निजी अस्पतालों मे भी यही हालात है जहां मौसमी बीमारी से पीडित मरीजों की भीड़ लग रही हैं।

कल्दा केंद्र बना मध्यप्रदेश का सर्वाधिक राजस्व एवं मुनाफा देने वाला वन धन विकास केंद्र

नवभारत न्यूज

पन्ना, 17 मई। दक्षिण पन्ना वनमण्डल अंतर्गत संचालित कल्दा वन धन विकास केंद्र ने वर्ष 2025-26 में जनजातीय आजीविका संवर्धन, महिला सशक्तीकरण एवं लघुवनोपज आधारित उद्यमिता के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करते हुए एक प्रेरणादायी मॉडल के रूप में पहचान बनाई है।

केंद्र द्वारा इस वर्ष लगभग 21.4 लाख का रिकॉर्ड राजस्व एवं लगभग 5 लाख का लाभ अर्जित किया गया, जो पिछले तीन वर्षों के औसत की तुलना में राजस्व में 400 प्रतिशत से अधिक तथा लाभ में 800 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि को दर्शाता है। पूर्व वर्षों में केंद्र का राजस्व एवं लाभ क्रमश: वर्ष 2021-22 में 6.5 लाख एवं 17 हजार, वर्ष 2022-23 में 4.7 लाख एवं 67 हजार, वर्ष 2023-24 में 2.6 लाख एवं 63 हजार तथा वर्ष 2024-25 में 5.1 लाख एवं 22 हजार रहा था। यह वृद्धि स्थानीय संग्राहकों को बेहतर मूल्य, गुणवत्तापूर्ण प्रसंस्करण एवं प्रभावी विपणन रणनीतियों का परिणाम मानी जा रही है। वन धन विकास केंद्र कल्दा के माध्यम से स्थानीय आदिवासी संग्राहकों को लघुवनोपज का मूल्य न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी अधिक प्राप्त हो रहा है। उदाहरणस्वरूप अचार/चिरौंजी चरवा का समर्थन मूल्य 130 प्रति किलोग्राम निर्धारित है,

जबकि गुणवत्ता के आधार पर संग्राहकों को वन धन केंद्र के माध्यम से लगभग 160 से 180 प्रति किलोग्राम तक मूल्य प्राप्त हुआ। बाद में इसी उपज का प्रसंस्करण, डीसीडिंग, सफाई एवं आकर्षक पैकेजिंग कर कल्दा चिरौंजी ब्रांड के रूप में विपणन किया गया। इस पहल से स्थानीय संग्राहकों की आय में वृद्धि हुई है तथा बिचौलियों पर निर्भरता कम हुई है। वर्ष 2025-26 में केंद्र को एक महत्वपूर्ण उपलब्धि तब प्राप्त हुई जब जेके सीमेंट के साथ सीएसआर साझेदारी स्थापित हुई, जिसके अंतर्गत आंगनवाड़ियों एवं विद्यालयों हेतु महुआ लड्डुओं की नियमित मासिक आपूर्ति सुनिश्चित की गई। इससे वन आधारित उत्पादों के लिए स्थायी बाजार उपलब्ध हुआ तथा स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं आय के अवसरों में वृद्धि हुई।

कल्दा वन धन विकास केंद्र द्वारा चिरौंजी, प्राकृतिक शहद, महुआ लड्डू, आंवला आधारित उत्पाद, त्रिफला चूर्ण, दहीमन, सूखा आंवला, बाल हर्रा एवं बहेड़ा छिलका जैसे विविध लघुवनोपज आधारित उत्पाद विकसित किए जा रहे हैं। उत्पादों की गुणवत्ता, स्वच्छता एवं पोषणीय मानकों पर विशेष ध्यान दिया गया है। वर्ष 2025-26 में केंद्र के अधिकांश प्रमुख उत्पादों का एफएसएसएआई मान्यता प्राप्त प्रयोगशाला में परीक्षण कराया गया, जिसमें उनकी उच्च गुणवत्ता, शुद्धता एवं पोषणीय मूल्य की पुष्टि हुई। भोपाल में आयोजित अंतरराष्ट्रीय वन मेला 2025 में केंद्र के उत्पादों को पूरे मध्यप्रदेश में दूसरा सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। वहीं नई दिल्ली में आयोजित भारत ट्राइब्स फेस्ट (आदि महोत्सव) 2026 में कल्दा वन धन विकास केंद्र का चयन मध्यप्रदेश के प्रतिनिधि के रूप में किया गया, जहां चिरौंजी, प्राकृतिक शहद एवं महुआ लड्डुओं सहित विभिन्न उत्पाद आकर्षण का केंद्र बने।

जमीन विवाद के चलते बुजुर्ग विधवा पर भाई ने किया हमला

नवभारत न्यूज

पन्ना, 17 मई। जिले के सिमरिया थाना अंतर्गत साटा बुद्ध सिंह गांव में रिश्तों को शर्मसार करने वाली एक सनसनीखेज वारदात सामने आई है। यहाँ जमीन के लालच में एक कलयुगी भाई ने अपनी ही 72 वर्षीय बुजुर्ग विधवा बहन पर लाठी-डंडों और कुल्हाड़ी के हत्थे से जानलेवा हमला कर दिया।

बीच-बचाव करने आए वृद्धा के इकलौते भाई को भी आरोपी ने बेरहमी से पीट दिया। गंभीर रूप से घायल बुजुर्ग महिला को जिला अस्पताल रेफर किया गया है। घटना को लेकर पीड़ितों ने पुलिस अधीक्षक से न्याय की गुहार लगाई है।

सिमरिया अस्पताल की संवेदनहीनता, फर्श पर लिटाकर किया इलाज - इस पूरी घटना ने जहाँ एक ओर रिश्तों को दागदार किया, वहीं दूसरी ओर स्थानीय स्वास्थ्य व्यवस्था की पोल खोलकर रख दी। मारपीट में गंभीर रूप से घायल वृद्धा को जब लहूलुहान हालत में सिमरिया के स्थानीय अस्पताल ले जाया गया, तो वहाँ संवेदनहीनता की पराकाष्ठा देखने को मिली। अस्पताल में बुजुर्ग मरीज के लिए एक बेड तक नसीब नहीं हुआ। तड़पती हुई 72 वर्षीय बुजुर्ग महिला को जमीन पर लिटाकर डॉक्टरों ने उनका प्राथमिक उपचार किया।

पैतृक जमीन पर कब्जे का विरोध करने पर हमला

मिली जानकारी के अनुसार, साटा बुद्ध सिंह निवासी पीड़िता बेवा हरछटिया लुहार (72 वर्ष) की पैतृक जमीन पर उसका ही रिश्तेदार भाई पंछी लुहार लंबे समय से नीयत खराब किए हुए था। शनिवार को जब आरोपी पंछी लुहार जमीन पर अवैध कब्जा करने की कोशिश कर रहा था, तब बुजुर्ग महिला ने हिम्मत दिखाकर इसका विरोध किया। विरोध से आगबबूला होकर आरोपी ने वृद्धा पर लाठी-डंडों और कुल्हाड़ी के हत्थे से हमला बोल दिया। चीख-पुकार सुनकर जब महिला का इकलौता भाई अपनी बहन को बचाने दौड़ा, तो आरोपी ने उसे भी नहीं बख्शा और उसकी भी जमकर पिटाई कर दी।

भीषण गर्मी से बचाव के लिए मैदानी अमले को उपयोगी सामग्री की वितरित

नवभारत न्यूज

पन्ना, 17 मई। दक्षिण पन्ना वनमण्डल द्वारा भीषण गर्मी एवं जंगलों में लगातार मैदानी कार्यों को ध्यान में रखते हुए वनकर्मियों, सुरक्षा कर्मियों, फायर वाचर्स तथा वन विभाग के सहयोगी ग्रामीणों को बड़ी संख्या में उपयोगी सामग्री वितरित की गई है।

इसका उद्देश्य जंगलों में कार्यरत अमले को गर्मी, लू एवं डिहाइड्रेशन

जैसी परिस्थितियों से सुरक्षित रखना तथा उनकी कार्यक्षमता बनाए रखना है। वनमण्डल स्तर पर लगभग 1700 इंसुलेटेड वाटर बॉटल, 1500 कॉटन टी-शर्ट, 2700 इलेक्ट्रॉल सैशे एवं 600 कॉटन गमछों का वितरण किया गया। गर्मियों के दौरान जंगलों में फायर प्रोटेक्शन, गश्त, वन्यजीव संरक्षण एवं अन्य मैदानी गतिविधियों में लगे कर्मचारियों एवं ग्रामीण सहयोगियों के लिए यह सामग्री अत्यंत उपयोगी साबित हो रही है। दक्षिण पन्ना वनमण्डल द्वारा मैदानी अमले के स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं कार्य सुविधा को प्राथमिकता देते हुए लगातार ऐसे प्रयास किए जा रहे हैं।

वनरक्षकों की मेहनत से बदला बघनरवा का स्वरूप

नवभारत न्यूज

पन्ना, 17 मई। दक्षिण पन्ना वनमण्डल के बघनरवा बीट में वनरक्षकों की कड़ी मेहनत और कैम्पा मद के प्रयासों से 30 हेक्टेयर का बंजर क्षेत्र अब घने जंगल में बदल चुका है।

वर्ष 2018 से 2023 के बीच हुए पौधरोपण, चराई नियंत्रण और सतत निगरानी के कारण यह उजाड़ इलाका सागौन, शीशम और आंवला जैसे पेड़ों से लहलहा उठा है, जिससे स्थानीय जैव विविधता और भूजल संरक्षण को नया जीवन मिला है।

पहले लगभग खाली एवं बंजर दिखाई देने वाला क्षेत्र अब घने हरित आवरण से आच्छादित नजर आ रहा है। यह परिवर्तन वन विभाग द्वारा किए गए पौधरोपण, संरक्षण, चराई नियंत्रण एवं सतत निगरानी प्रयासों का सकारात्मक परिणाम है।

अवैध हीरा खदानों के पास सांभर का शिकार, विस्फोटक से मौत

नवभारत न्यूज

पन्ना, 17 मई। पन्ना जिले के उत्तर वनमंडल के तहत विश्रामगंज रेंज में जंगल की सीमा के किनारे अवैध रूप से हीरा और पत्थर की खदानें संचालित हैं। यहां 9 बाघों का स्थाई आवास है पूरा जंगल ही बाघ भ्रमण क्षेत्र है।

गुरुवार को सरकौहा गांव के पास संचालित अवैध हीरा खदानों के पास एक सांभर का शिकार किया गया है। विश्रामगंज रेंज में एक सप्ताह में सांभर के शिकार की यह दूसरी घटना है। इसी रेंज में 8 मई को भी एक शिकार पकड़ा गया था। विश्रमगंज रेंजर नितिन राजौरिया ने बताया कि वयस्क सांभर का शिकार सरकौहा गांव के पास किया गया है। शव का शुक्रवार को पीएम किया गया। पीएम करने वाले डॉ. संजीव गुप्ता ने बताया कि सांभर के मुंह में विस्फोटक फटने से उसकी मौत हुई है। सांभर के सींग भी गायब थे। पहली नजर में यह शिकार का मामला है।

पंचायत से लेकर विधानसभा एवं लोकसभा तक भाजपा का कब्जा

जिले में सड़कें तक जर्जर, अनाथ जैसी स्थिति में पन्ना जिला

नवभारत न्यूज

पन्ना, 17 मई। पन्ना जिले में सड़कों की हालत खस्ताहाल है जबकि आज लगभग बीस वर्षों से लेकर आज तक जिले सबसे छोटी इकाई ग्राम पंचायत से लेकर नगरीय निकायों एवं जनपद से जिला पंचायत एवं विधान सभा से लोकसभा तक भाजपा का कब्जा है लेकिन फिर भी जिला विकास को तरस रहा है ऐसा लग रहा है कि पन्ना जिले का कोई रहनुमा ही नही है अनाथ जैसा लग रहा है ।

हां इतना अवश्य है कि विकास पुरूषों के चमचे जरूर फोटो शेसन एवं शोसल मीडिया में जिले में सब कुछ स्वर्ग की तरह चकाचक दिखा रहे हैं लेकिन वास्तविकता यह है कि जिला मूलभूत सुविधाओं सड़क,शिक्षा एवं स्वास्थ्य तक के लिए मोहताज है। जिले में प्रमुख सड़क मार्गों की हालत लगातार बिगड़ती जा रही है। कहीं गड्ढों में सड़क तलाशनी पड़ रही है, कहीं मरम्मत के नाम पर खानापूर्ति हो रही है, तो कहीं पुल बनने के बाद भी रास्ता शुरू नहीं किया जा सका है। ऐसे हालात में आमजन, किसान, व्यापारी और वाहन चालक सभी परेशान हैं।

एनएच-39 पन्ना-सतना- बमीठा मार्ग- एनएच-39 पन्ना से सतना की ओर जनवार मोड़ तक रास्ता बदहाल है। चालकों को गड्ढों में सड़क की तलाश करनी पड़ रही है। कमोबेश यही हाल पन्ना से बमीठा तक का है। ठेका लेकर आधा-अधूरा काम करने वाले ठेकेदार पर लोक निर्माण विभाग संभाग रीवा मेहरबान बना हुआ है। नोटिस देकर महज कागजी कोरम पूरा किया गया किसी तरह की कार्रवाई नहीं की गई।

पन्ना-कटनी मार्ग- पन्ना- अमानगंज मार्ग में पन्ना से बांधी मोड़ तक मरम्मत के बाद भी झटके लग रहे हैं। मरम्मत के नाम पर अफसर खानापूर्ति करने में जुटे हैं। पवई से कटनी का सफर भी मुश्किलों से भरा हुआ है। चांदा घाटी और बायपास का काम भी मंद गति से चल रहा है। लोगों को जान जोखिम में डालकर सफर करने को मजबूर है। जिम्मेदार बेखबर बने हुए हैं।

पर्यटन कारोबार पर गंभीर असर- जिला मुख्यालय को ग्रामीण और कस्बाई अंचल से जोड़ने वाली सड़कों की हालत भी जिले में अच्छी नहीं है। सड़कों की खराब हालत से जिले में कारोबार और पर्यटन गंभीर रूप से प्रभावित हो रहे हैं। इसका सीधा नुकसान आम जनता को भुगतना पड़ रहा है।

अजयगढ़ मार्ग समाप्त फिर टैक्स पूरा किया जा रहा वसूल

पन्ना-अजयगढ़ मार्ग भी देखरेख और निगरानी के अभाव में बदहाल हो गया है। यहां कि गड्ढों अब सड़क तलासनी पड़ रही है । तत्कालीन कलेक्टर की सख्ती के बाद मार्ग की मरम्मत कराई गई थी पर इसमें गुणवत्ता का ख्याल नहीं रखा गया। नतीजन घाटी में जगह-जगह गड्ढे हो गए हैं, जिससे भारी वाहन अनियंत्रित हो रहे हैं। ऐसे में कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। सड़क का लगभग नामोनिशान समाप्त होने की कगार पर है। सिमरिया-गैसाबाद मार्ग में नदी पर पुल बनकर तैयार हो गया है, इसके बाद भी मार्ग बंद है। जिला प्रशासन की पहल के बाद भी इस मार्ग से आवाजाही शुरू नहीं हो पा रही है। ऐसे में वाहन चालकों को 40 से 50 किमी का अतिरिक्त फेरा लगाना पड़ रहा है। प्रशासन की अनदेखी से ग्रामीणों में नाराजगी है। ईंधन पर लोगों को अतिरिक्त रुपए खर्च करने पड़ रहे हैं। प्रशासन से कई बार पुल से आवागमन चालू कराने के लिए मांग की जा चुकी है। इसके बाद भी प्रशासन लोगों की समस्या को गंभीरता से नहीं ले रहा है।